भी उनका पृथक् स्वरूप था, वर्तमान में भी है और भविष्य में मुक्ति हो जाने पर भी रहेगा। रात्रि के अंधकार में सब कुछ एकरूप भासता है; किन्तु उषाकाल में सूर्योदय होते ही प्रत्येक वस्तु अपने यथार्थ रूप में दृष्टिगोचर हो जाती है। जीव और भगवान् में अचिन्त्य-भेद-अभेद का ज्ञान ही सच्चा पारमार्थिक ज्ञान है।

19/5

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः।।१७।।

तत् बुद्धयः=नित्य भगवत्-परायण मति वाले; **तत्-आत्मनः**=नित्य भगवान् में चित्त वाले; **तत्-निष्ठाः**=नित्य श्रीभगवान् में निष्ठ मन वाले; **तत्परायणाः**=जो पूर्णतया भगवान् के शरणागत हो गये हैं; **गच्छन्ति**=जाते हैं; **अपुनरावृत्तिम्**= मुक्ति को; **ज्ञान**=ज्ञान द्वारा; **निर्धूत**=शुद्ध हुए; **कल्मषाः**=पापों से।

अनुवाद

अपनी बुद्धि, चित्त और निष्ठा श्रीभगवान् में केन्द्रित करके जब जीव उन्हीं के परायण हो जाता है, तब वह पूर्ण ज्ञान द्वारा पाप और संशयों से शुद्ध होकर तत्काल मुक्तिपथ पर आरूढ़ हो जाता है।।१७।।

तात्पर्य

भगवान् श्रीकृष्ण परात्पर सच्चिदानन्द तत्त्व हैं। सम्पूर्ण भगवद्गीता श्रीकृष्ण की भगवत्ता के उद्घोष पर आश्रित है। यह सकल वैदिक शास्त्रों का मत है। तत्त्ववेत्ता परतत्त्व को ब्रह्म, परमात्मा तथा श्रीभगवान् के रूप में जानते हैं। पर श्रीभगवान् ही इस परतत्त्व की अवधि हैं। उनसे अधिक कुछ भी नहीं है। स्वयं श्रीभगवान् का वचन है: **मत्तः परतरं नान्यत् किंचित् अस्ति धनंजय।** निर्विशेष ब्रह्म के आधार भी श्रीकृष्ण **ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहम्** अतः सब प्रकार से श्रीकृष्ण परात्पर हैं। जिस के मन, बुद्धि, निष्ठा और आश्रयता नित्य श्रीकृष्ण में केन्द्रित हैं, जो पूर्णतया कृष्णभावनाभावित है, वह पुरुष निःसन्देह सम्पूर्ण पापों से मुक्त होकर परम सत्य के पूर्णज्ञान में परिनिष्ठित हो जाता है। कृष्णभावनाभावित पुरुष श्रीकृष्ण के अचिन्त्य-भेद-अभेद तत्त्व को भलीभाँति जानता है। इस दिव्य ज्ञान से युक्त होकर वह मुक्तिपथ में उत्तरोत्तर सुस्थिर प्रगति कर सकता है।

20/5

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।१८।।

विद्या=शिक्षा; **विनय**=नम्रता से; **सम्पन्ने**=युक्त; **ब्राह्मणे**=ब्राह्मण में; **गवि** =गाय में; **हस्तिनि**=गजराज में; **शुनि**=कुत्ते में; **च**=तथा; **एव**=निःसन्देह; **श्वपाके**= चाण्डाल में; **च**=भी; **पण्डिताः**=ज्ञानी; **समदर्शिनः**=समान दृष्टि से देखते हैं।

अनुवाद

यथार्थ ज्ञानी विद्या-विनययुक्त ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में समदर्शी होते हैं।।१८।।